अध्याय-3

शोध पद्धति

शोध पद्धति किसी भी विद्वत्तापूर्ण जांच की रीढ़ की हड्डी के रूप में कार्य करती है, जो शोध प्रश्नों का पता लगाने और अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उपयोग किए जाने वाले व्यवस्थित दृष्टिकोण और उपकरणों को रेखांकित करती है। शोध कार्य में यह अध्ययन किया गया है कि आनंद सभा पाठ्यक्रम किस प्रकार सार्वभौमिक मूल्यों जैसे - प्रेम, विश्वास सत्य, अहिंसा, करुणा, सहयोग, सहिष्णुता, एवं नैतिक चेतना के संवर्धन में सहायक है। यह पाठ्यक्रम सामाजिक, नैतिक, एवं आध्यात्मिक मूल्यों को उभारता है, जिसका संबंध शिक्षा की समग्रता एवं व्यक्ति निर्माण से है।

3.1 शोध की प्रकृति

1. गुणात्मक शोध: यह अध्ययन गुणात्मक शोध की श्रेणी में आता है क्योंकि इसमें मात्रात्मक आँकड़ों की बजाय पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु, विचारों, मूल्यों, सिद्धांतों, और शैक्षिक दृष्टिकोणों का गहराई से अध्ययन और विश्लेषणात्मक व्याख्या की जाती है। इसमें यह जाना जाता है कि "आनन्द सभा" पाठ्यक्रम में कौन-कौन से सार्वभौमिक मूल्य निहित हैं, और वे विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित करते हैं। **उदाहरण:** प्रेम, करुणा, अहिंसा, सहिष्णुता, सहयोग, आत्मनिरीक्षण, सामाजिक उत्तरदायित्व आदि।

2. वर्णनात्मक शोध: यह अध्ययन वर्णनात्मक भी है क्योंकि इसमें "आनन्द सभा" पाठ्यक्रम की सामग्री का विवरणात्मक (descriptive) अध्ययन किया जाता है - अर्थात पाठ्यक्रम की रचनाओं, अध्यायों और उपदेशों को तथ्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है कि किस अध्याय में क्या मूल्य है और वह पाठ छात्र को किस प्रकार प्रभावित करता है। **उदाहरण:** पाठ 4 में "सुख की निरंतरता" विषय है जो यह दर्शाता है कि केवल भौतिक संसाधनों से स्थायी सुख संभव नहीं है – यह विवेक, संतोष और समझदारी जैसे मूल्यों की व्याख्या करता है।

3. विश्लेषणात्मक शोध : यह शोध विश्लेषणात्मक भी है क्योंकि इसमें वर्णित मूल्यों का विश्लेषण करके यह दर्शाया जाता है कि ये मूल्य वास्तव में कैसे सार्वभौमिक हैं – जैसे कि

क्या वे सभी धर्मों, सभ्यताओं और समाजों में समान महत्व रखते हैं?

क्या ये मूल्य विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण और सामाजिक व्यवहार में सहयोग करते हैं?

4. अंतःविषयक : यह अध्ययन शिक्षा, दर्शन, समाजशास्त्र और मानव मूल्यों जैसे विभिन्न विषयों से जुड़ा हुआ है। इसलिए इसमें अंतःविषयक दृष्टिकोण अपनाया गया है। यह मूल्य-शिक्षा को केवल एक विषय नहीं बल्कि मानव जीवन की संपूर्णता से जोड़ता है।

5. सांस्कृतिक और नैतिक परिप्रेक्ष्य शोध की प्रकृति ऐसी है जो "भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों" और "वैश्विक नैतिक सिद्धांतों" दोनों को आधार बनाती है। जैसे– भारतीय दर्शन में "वसुधैव कुटुम्बकम्" और वैश्विक दृष्टिकोण से "Universal Human Rights" या "Global Citizenship Values". इस प्रकार यह शोध एक गुणात्मक, विश्लेषणात्मक और अंतःविषयक प्रकृति का अध्ययन है, जिसका उद्देश्य "आनन्द सभा" के पाठ्यक्रम में निहित सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की पहचान, व्याख्या और प्रभाव का गहन अध्ययन करना है। यह शोध गुणात्मक (Qualitative) प्रकार का है, जिसमें ऐतिहासिक, दार्शनिक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है। इसके अंतर्गत शैक्षिक दस्तावेज़ों, पाठ्यक्रम, नीति पत्रों, और संबंधित संस्थानों की रिपोर्टों का अध्ययन किया गया है।

3.2 नमूना:-

1. नमूना चयन का स्वरूप: इस शोध में गुणात्मक अध्ययन (Qualitative Research) की दृष्टि से संपूर्ण "आनन्द सभा" पाठ्यपुस्तक (कक्षा 10, 2024 संस्करण) को अध्ययन की इकाई (unit of study) के रूप में चुना गया है। यह एक पूर्ण जनसंख्या नमूना (Total Population Sample) है। इसका अर्थ है कि पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक अध्याय, अनुभाग, गतिविधि, कहानी और संवाद को शोध का हिस्सा माना गया है – किसी भी हिस्से को छोड़ा नहीं गया है।

2. नमूना चयन का कारण : इस शोध का मूल उद्देश्य "आनन्द सभा" पाठ्यक्रम में अंतर्निहित सार्वभौमिक मूल्यों की पहचान और विश्लेषण करना है। इसलिए:

एक प्रतिनिधि अध्याय चुनना पर्याप्त नहीं होता क्योंकि हर अध्याय अलग मूल्य, दृष्टिकोण और सन्देश को उजागर करता है।
प्रत्येक अध्याय में भिन्न-भिन्न नैतिक, सामाजिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक और दार्शनिक मूल्य निहित हैं।

अतः पाठ्यपुस्तक का समग्र अध्ययन आवश्यक है ताकि किसी भी मूल्य या दृष्टिकोण की उपेक्षा न हो।

3. नमूना की विशेषताएँ

विशेषता	विवरण
नमूना का प्रकार	पूर्ण जनसंख्या नमूना (Total Population Sampling)
स्रोत	कक्षा 10 की "आनन्द सभा" पाठ्यपुस्तक

	(2024 संस्करण)
इकाई	अध्याय, कविताएँ, शिक्षण अनुभाग, अभ्यास प्रश्न, प्रोजेक्ट
कुल अध्याय	11 प्रमुख अध्याय + परिशिष्ट
चयन का आधार	सार्वभौमिक मूल्यों की व्यापकता और विविधता

*. उपयोग की गई सामग्री की श्रेणियाँ (Categories of Sample Content)

शोध में निम्नलिखित प्रकार की सामग्री का विश्लेषण किया गया:

सैद्धांतिक भाग - जैसे अध्याय 1: मूल्यों की शिक्षा, अध्याय 2: स्व-अन्वेषण की प्रक्रिया

भावनात्मक भाग - जैसे अध्याय 8: ममता, श्रद्धा, प्रेम आदि

आचरण/व्यवहार पक्ष - जैसे अध्याय 6: स्वयं में व्यवस्था, अध्याय 7: संयम और स्वास्थ्य

प्राकृतिक एवं अस्तित्व संबंधी मूल्य - जैसे अध्याय 10 व 11

प्रश्नोत्तर, गतिविधियाँ व अभ्यास - जिनके माध्यम से छात्रों की सहभागिता और मूल्य अनुभूति देखी जाती है

नमूना सीमाएँ

अध्ययन केवल कक्षा 10 की पुस्तक तक सीमित है – अन्य कक्षाओं (9, 11, 12) को शामिल नहीं किया गया।

पुस्तक का उपयोग विभिन्न विद्यालयों में भिन्न-भिन्न रूप में हो सकता है - व्यवहारिक रूप से इसे मापा नहीं गया।

यह पाठ्यपुस्तक की पाठ्य सामग्री तक सीमित है, छात्रों के अनुभव या व्यवहार में मूल्यों के प्रभाव को प्रत्यक्ष रूप से नहीं मापा गया ।

“संपूर्ण पुस्तक को नमूने के रूप में चुनना” इस शोध की एक सशक्त विशेषता है, जो यह सुनिश्चित करती है कि सभी संभावित मूल्य तत्वों का समावेशी विश्लेषण हो सके। यह प्रक्रिया शोध को समग्रता, गहराई और नैतिक वैधता प्रदान करती है।

3.3 उपकरण:-

शोध में प्रयुक्त "उपकरण" वे साधन व तकनीकें होती हैं जिनकी सहायता से शोधकर्ता डेटा को इकट्ठा करता है, विश्लेषण करता है और निष्कर्ष निकालता है। इस गुणात्मक शोध में आंतरिक सामग्री (Textual Content) और उसमें निहित मूल्यों का गहराई से अध्ययन किया गया है। इस उद्देश्य के लिए निम्नलिखित शोध उपकरणों का उपयोग किया गया:

1. विषयवस्तु विश्लेषण

यह प्रमुख उपकरण है, जिसके माध्यम से "आनन्द सभा" पाठ्यपुस्तक की कहानियों, कविताओं, उदाहरणों, प्रश्नों, और शैक्षिक गतिविधियों का सूक्ष्म अध्ययन किया गया। इसमें शामिल गतिविधियाँ: प्रत्येक अध्याय की गहराई से व्याख्या (Interpretation) ,मूल विचार, उद्देश्य और सन्देश की पहचान ,अध्याय के भीतर छिपे नैतिक, सामाजिक, मानवीय और सांस्कृतिक मूल्यों की पहचान , मूल्य की प्रकृति - व्यक्तिगत, सामाजिक, पर्यावरणीय या अस्तित्ववादी

उदाहरण: अध्याय 4 "सुख और समृद्धि को समझना" में प्रस्तुत विचारों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि केवल भौतिक उपलब्धियाँ पर्याप्त नहीं होतीं – यहाँ विवेक, आत्म-संतोष और अंतःकरण की संतुष्टि जैसे मूल्य निहित हैं।

2. मूल्य-निर्धारण ढाँचा:- यह एक ढाँचागत उपकरण है जो हर पाठ में पाए गए मूल्यों को सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की श्रेणियों में वर्गीकृत करने में मदद करता है। इसमें निम्नलिखित प्रमुख श्रेणियाँ शामिल की गईं:

मूल्य की श्रेणी	उदाहरण
व्यक्तिगत मूल्य	ईमानदारी, आत्मनिरीक्षण, संयम
सामाजिक मूल्य	सहयोग, करुणा, न्याय
सांस्कृतिक मूल्य	श्रद्धा, ममता, कृतज्ञता
पर्यावरणीय मूल्य	प्रकृति के साथ सामंजस्य

वैश्विक मूल्य	सह-अस्तित्व, शांति, वैश्विक नागरिकता

तुलनात्मक विश्लेषण : यह उपकरण “आनन्द सभा” में वर्णित मूल्यों की तुलना NEP 2020 तथा अन्य शैक्षिक दस्तावेजों में उल्लिखित मूल्यों से करने हेतु उपयोग किया गया।

3.4 डेटा संग्रहण की विधि:-

शोध कार्य को व्यवस्थित रूप से संपन्न करने के लिए विश्वसनीय और प्रासंगिक अध्ययन किया गया है. प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से डेटा एकत्र किया गया है। इस शोध का मूल फोकस मूल्यों की पहचान और उनके शैक्षिक संदर्भ में विश्लेषण करना है।

A. प्राथमिक स्रोत

“आनन्द सभा” कक्षा 10 की पाठ्यपुस्तक (2024 संस्करण),इस पाठ्यपुस्तक की समस्त शिक्षण सामग्री - जैसे: कहानियाँ: जो विद्यार्थियों में करुणा, सत्यता, सहयोग, कर्तव्यबोध जैसे मूल्यों को प्रेरित करती हैं। प्रेरणादायक प्रसंग / शिक्षण अनुभाग: जो विद्यार्थी को जीवन के गहरे अर्थ और उद्देश्य की ओर ले जाते हैं।

विश्लेषण की पद्धति

हर पाठ, कहानी में समाहित मूल्यों की पहचान की गई।

उन मूल्यों को सार्वभौमिक मूल्यों की श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया (जैसे - शांति, प्रेम, करुणा, सत्य, सहिष्णुता आदि)।
विद्यार्थियों पर इन मूल्यों के संभावित प्रभावों की विवेचना की गई।

B. द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources)

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)

इस नीति में मूल्य-आधारित शिक्षा को विशेष प्राथमिकता दी गई है।

मूल्य-शिक्षा को विद्यालय शिक्षा के हर स्तर पर अनिवार्य बनाने की अनुशंसा की गई है।

NEP 2020 में उल्लिखित “सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक शिक्षा” के उद्देश्यों का “आनन्द सभा” पाठ्यक्रम से मिलान किया गया।

2. यूनिवर्सल ह्यूमन वैल्यूज (Universal Human Values) से संबंधित पुस्तकें व शोध-पत्र

AICTE द्वारा प्रकाशित UHV (Universal Human Values) की पुस्तकें और प्रशिक्षण सामग्री जैसे: "A Foundation Course in Human Values and Professional Ethics" ,UHV-II Modules (AICTE / UHV Trust / uhv.org.in),इन स्रोतों से यह समझा गया कि मानव मूल्यों को कैसे परिभाषित, वर्गीकृत और व्यावहारिक रूप में शिक्षित किया जा सकता है| 3. पूर्ववर्ती शोध और शैक्षिक नीति दस्तावेज (Previous research and educational policy documents)मूल्य-शिक्षा से संबंधित पूर्व प्रकाशित शोध-पत्र, शोध-प्रबंध, शैक्षिक समीक्षाएँ, यूनिसेफ एनसीईआरटी की रिपोर्ट्स आदि| इनका उपयोग "आनन्द सभा" पाठ्यक्रम की तुलना अन्य मूल्य-आधारित शैक्षिक प्रयासों से करने हेतु किया गया|

3.5 डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया:-

सभी अध्यायों को गहराई से पढ़कर मूल्यों की सूची तैयार की गई| सारणी (टैबुलेशन) की गई कि किस अध्याय में कौन-कौन से मूल्य निहित हैं|पाठ्यपुस्तक की सामग्री और द्वितीयक स्रोतों में वर्णित सार्वभौमिक मूल्यों के बीच तुलनात्मक विश्लेषण किया गया| विषयों की पुनरावृत्ति, उनका संदर्भ और विद्यार्थियों में अपेक्षित प्रभावों का अवलोकन किया गया| इस शोध में प्राथमिक स्रोत के रूप में "आनन्द सभा" पाठ्यपुस्तक का केंद्रीय विश्लेषण किया गया जबकि द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से इस विश्लेषण को नीति, सिद्धांत और शोध दृष्टिकोण से पुष्टि प्रदान की गई| इस प्रकार, यह डेटा संग्रहण प्रक्रिया शोध को वैचारिक गहराई और सैद्धांतिक वैधता प्रदान करती है|

1.पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक अध्याय का गहन पाठ विश्लेषण:

प्रथम चरण में, पुस्तक के सभी 11 अध्यायों (जैसे अध्याय 1: मूल्यों की शिक्षा को समझना,

अध्याय 4: सुख और समृद्धि, अध्याय 8: श्रद्धा, ममता, प्रेम,) आदि को ध्यानपूर्वक पढ़ा गया|

प्रत्येक पाठ के संदेश, कथानक, उदाहरण, प्रश्नोत्तरी व अभ्यास गतिविधियों का विवेचनात्मक अध्ययन किया गया| विश्लेषण करते समय यह देखा गया कि कौन-से मूल्य स्पष्ट रूप से तथा कौन-से अप्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत हैं|

उदाहरण: अध्याय 4 "सुख और समृद्धि को समझना" में मूल भाव:

- ✧ आत्म-संतोष
- ✧ विवेकपूर्ण जीवन
- ✧ भौतिक संसाधनों पर न्यूनतम निर्भरता
- ✧ नैतिक जीवन की प्राथमिकता

2.प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित नैतिक/सामाजिक/सांस्कृतिक मूल्यों की पहचान : हर अध्याय में प्रस्तुत विचारों और गतिविधियों के पीछे निहित मूल्यों की पहचान की गई| इस प्रक्रिया में

जिन मूल्यों को सबसे अधिक प्रमुखता मिली, वे हैं:
सत्यनिष्ठा (Honesty)

करुणा (Compassion)

सह-अस्तित्व (Coexistence)

स्वावलंबन (Self-reliance)

सहयोग (Cooperation)

प्रेम व मैत्री (Love and Friendship)

श्रद्धा व कृतज्ञता (Respect and Gratitude)

उदाहरण: अध्याय 6 "स्वयं में व्यवस्था" आत्म-अवलोकन और मन की स्थिरता पर बल देता है - जिससे आत्मनियंत्रण और मानसिक अनुशासन का मूल्य स्पष्ट होता है। NEP 2020, UNESCO, UHV (Universal Human Values) आदि द्वारा स्वीकृत सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की सूचियों से तुलना की गई: NEP 2020 द्वारा उल्लिखित मूल्य: समानता, समावेशिता, न्याय, स्वतंत्रता, सहयोग, करुणा, वैश्विक नागरिकता आदि। UNESCO की दृष्टि से: Peace, Human dignity, Tolerance, Respect for others, Equity, आनंद सभा पाठ्यक्रम में इन सभी मूल्यों की किसी न किसी रूप में उपस्थिति देखी गई।

अध्याय	**मुख्य मूल्य**	**सार्वभौमिक मूल्य से संबंध**
अध्याय 5	आत्म-अवलोकन, संयम	आत्मनियंत्रण, आत्मज्ञान
अध्याय 8 (अ)	ममता, वात्सल्य, श्रद्धा	करुणा, प्रेम, आदर
अध्याय 10	पर्यावरणीय संतुलन	प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व, सह-अस्तित्व

*विश्लेषण के आधार पर सारणीकरण और वर्गीकरण (Tabulation and Classification)

सभी अध्यायों के प्रमुख मूल्यों को एक तालिका में वर्गीकृत किया गया, जैसे:

सारणी: अध्याय अनुसार मूल्यों का वर्गीकरण

अध्याय संख्या	अध्याय का नाम	प्रमुख मूल्य	सार्वभौमिक श्रेणी
1	मूल्यों की शिक्षा को समझना	नैतिकता, विवेक, उद्देश्यपूर्ण शिक्षा	शिक्षा में मूल्यबोध
3	मूल चाहनाएँ	सुख, समृद्धि, संतुलित जीवन	जीवनदर्शन
6	स्वयं में व्यवस्था	आत्मनियंत्रण, कल्पनाशीलता	व्यक्तिगत अनुशासन
8 (अ)	श्रद्धा, ममता, कृतज्ञता	प्रेम, आदर, भावनात्मक जुड़ाव	मानव-मानव संबंध
10	प्रकृति व अस्तित्व की व्यवस्था	पर्यावरणीय चेतना, सहअस्तित्व	प्रकृति के प्रति दायित्व

“आनन्द सभा” पाठ्यक्रम के अध्यायों में निहित मूल्यों का विश्लेषण स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की समझ, अनुभूति, और व्यावहारिकता को विकसित करता है। यह प्रक्रिया पाठ्य-सामग्री की गहराई से व्याख्या, मूल्यों की पहचान, तुलनात्मक अध्ययन, और सार्थक वर्गीकरण पर आधारित हैं

यह ढाँचा NEP 2020, UNESCO, और UHV द्वारा स्वीकार किए गए मूल्यों पर आधारित है।

3.6 नैतिक विचार:-

1. मानवीय गरिमा का सम्मान : विद्यार्थियों और शिक्षकों के दृष्टिकोण, अनुभव, आस्थाओं का पूरा सम्मान किया गया हैं । आनंद सभा पाठ्यक्रम मानता है कि हर व्यक्ति में चेतना और आत्मसम्मान होता है; इसलिए शोधकर्ता भी सहभागियों की गरिमा बनाए रखी है।

2. हानि रहितता का सिद्धांत: कोई भी गतिविधि विद्यार्थियों के मानसिक, भावनात्मक या सामाजिक स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं करती।

Universal Human Values जैसे प्रेम, शांति, न्याय, करुणा - विद्यार्थियों में सकारात्मक ऊर्जा लाने वाली है भय या अपराधबोध नहीं।

संवेदनशीलता और सांस्कृतिक आदर: आनंद सभा पाठों में आत्मा, शरीर, प्रकृति, सामाजिक व्यवहार आदि पर चर्चा होती है – इसमें किसी की धार्मिक या सांस्कृतिक मान्यताओं को ठेस न पहुँचे यह पूर्ण प्रायस किया गए है ,शोधकर्ता ने सांस्कृतिक विविधता और विद्यार्थियों की भावनात्मक अवस्था का ध्यान रखा है | पक्षपात से बचाव, Universal Values जैसे सत्य, न्याय, समानता शोधकर्ता से अपेक्षा करते हैं कि वह निष्पक्ष रहे। न तो अपने व्यक्तिगत धार्मिक, सामाजिक या वैचारिक झुकाव थोपे, और न ही विषयों के चुनाव में भेदभाव करे।

Alignment with NEP 2020 Principles

आनंद सभा पाठ्यक्रम, NEP 2020 की आत्मा के अनुरूप है: holistic development, value-based education, critical thinking। इसलिए किसी भी अध्ययन या विश्लेषण को नीति की इन्हीं नैतिक प्राथमिकताओं के अनुरूप होना चाहिए। Ethical Considerations सुनिश्चित करते हैं कि: अध्ययन केवल शैक्षणिक नहीं, नैतिक रूप से उत्तरदायी भी हो। Universal Human Values केवल विषय नहीं, शोध पद्धति का भी आधार बनें।विद्यार्थी केवल रिसर्च सब्जेक्ट नहीं, सम्मानित और जागरूक मानव इकाई समझे जाएँ।